अक्टूबर-2014 मूल्य : 15/-

भागवत चिंतन

अध्यात्म ❖ दर्शन ❖ सद्‌चिंतन ❖ भक्ति साहित्य समन्वित

मासिक पत्रिका



दीपावली पर लें संकल्प

सेवा के दीये जलाने का
दूसरों के मन हर्षाने का

14 से 21 अगस्त तक रोहिणी, दिल्ली में आयोजित कथा



गीता मनीषी संत श्री ज्ञानानंद जी एवं जैन संत डा. लोकेश मुनि जी का भी सान्निध्य भक्तों को प्राप्त हुआ

गौ रक्षा दल के अध्यक्ष श्री सतीश कुमार जी को गौ के लिए 31000 रुपये का सहयोग देते हुए ठाकुर



27 अगस्त से 2 सितम्बर तक ब्रजराजनगर, उड़ीसा में सम्पन्न भागवत ज्ञानयज्ञ





॥ श्रीकृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

भागवत चिंतन

अध्यात्म ❖ दर्शन ❖ सद्चिन्तन ❖ भक्ति साहित्य समन्वित मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 | अक्टूबर–2014 | अंक : 2

प्रेरणाश्रोत : श्रद्धेय श्री संजीव कृष्ण 'ठाकुरजी'

अनुक्रमणिका...

:: मुख्य कार्यालय ::

श्री राधामाधव सेवाश्रय चैरीटेबिल ट्रस्ट (रजि.)

श्री राधामाधव धाम, निकट श्याम कुटी

परिक्रमा मार्ग, वृन्दावन, (मथुरा) 281121 उ.प्र.

दूरभाष : 0091-9219664065, 0091-8126721167

E-mail : info@samarpangoshala.com
Website : www.samarpangoshala.com

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री सत्यभान शर्मा के लिए श्री राधामाधव सेवाश्रय चैरिटेबिल ट्रस्ट, वृन्दावन से प्रकाशित एवं आशीष प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, मथुरा में मुद्रित।


Proposed 3D Elevation
GOKUL DHAM DHARAMSHALA
PLOT No. : D-25 TO 27, RUKMANI VIHAR, VRINDAVAN (U.P.)
Shri Sanjiv Krishna Thakurji
Founder President
ठाकुर जी के सान्निध्य में वृन्दावन में निर्माणाधीन गोकुल धाम (धर्मशाला) में पैटर्न ट्रस्टी, ट्रस्टी एवं कमरा निर्माण के लिए मुख्य कार्यालय पर सम्पर्क करें।



शत्रु व मित्र दोंनो आप

श्रद्धेय संजीव कृष्ण ठाकुर जी

गीताजी में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को कहते हैं,

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानं अवसादयेत।

आत्मैवह्यात्मनो बन्धु रात्मैव रिपुरात्मनः।।

अर्थ–अपने द्वारा स्वयं अपना उद्धार करो, संसार सागर से स्वयं को स्वयं के द्वारा ही बाहर निकालो। इस दुनियाँ में ना तो कोई किसी का मित्र है और नाहीं कोई किसी का शत्रु। आदमी स्वयं ही अपना मित्र है और स्वयं ही अपना शत्रु।

तुम्हारी दशा सुधारने के लिए कोई आगे नहीं आएगा, तुम्हें स्वयं ही खड़ा होना होगा। स्वयं ही जागकर संकल्प लेना होगा। तुम्हारी दशा तब नहीं सुधरती जब परिस्थिति बदलती है अपितु तब सुधरती है, जब तुम परिस्थिति बदलने का संकल्प लेते हो।

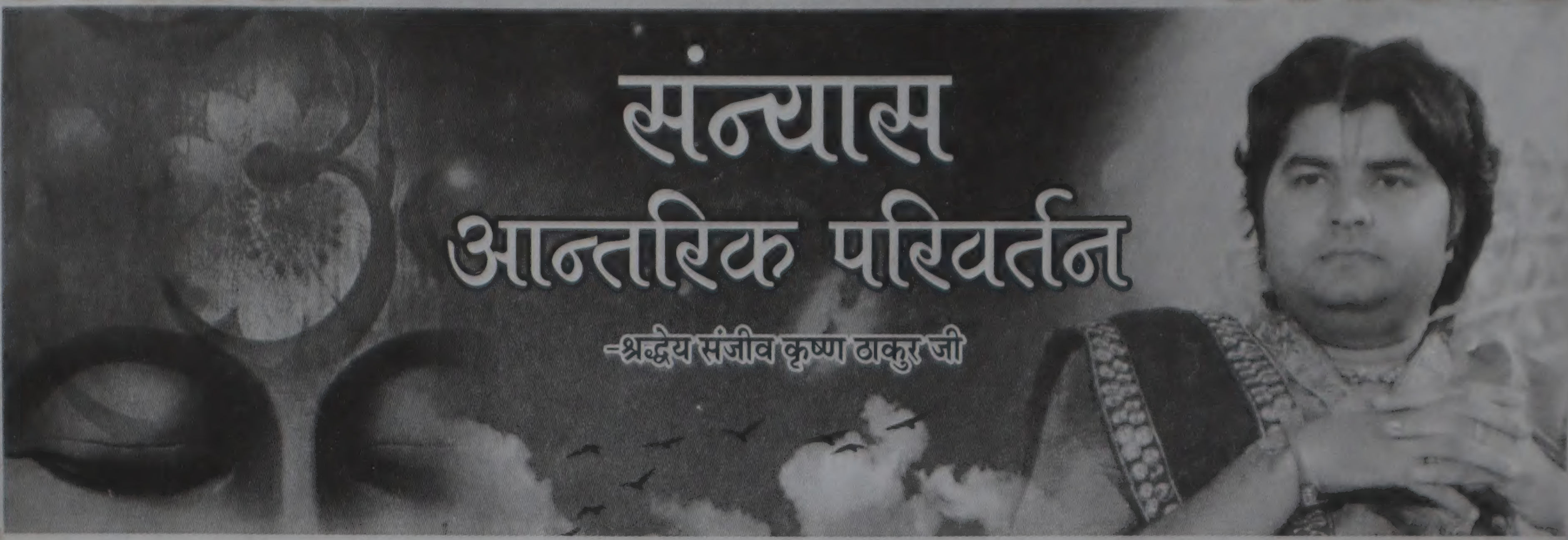
उठो, जागो और एक नई सोच के साथ खड़े हो जाओ। किसके भरोसे बैठे हुए हो ? क्यों किसी की सहायता पर जी रहे हो ? क्यों किसी पर बोझ बने हुए हो ? कौन तुम्हारी स्थिति सुधारेगा ? यहाँ सब अपने लिए जी रहे हैं।

तुम जब भी परेशान हो जाओ तो आइने के सामने जाकर खड़े हो जाना, उसमें आपको एक व्यक्ति नजर आएगा। यही वह व्यक्ति है जो आपकी हर समस्या को हल कर सकता है। आपके हर सपने को साकार कर सकता है।

स्वयं पर भरोसा रखकर ही आप आगे बढ़ सकते हो। दूसरे लोग तो केवल रास्ता बना सकता हैं, चलना तो आपको खुद ही पड़ेगा। अपनी दशा के लिए आप स्वयं जिम्मेदार हो। आप सुखी हो, दुखी हो, प्रसन्न हो, परेशान हो, जो कुछ भी हो। 90 प्रतिशत तुम्हारा योगदान है, 10 प्रतिशत दुसरे लोगों का योगदान है। अभी कुछ नहीं बिगड़ा, संभल जाओ।



इच्छा शक्ति कल्प वृक्ष के समान है जो आपको
हर वो चीज दे सकती है जिसकी आप कल्पना करते है।
–गुरुशरणानंद जी महाराज



संन्यास आन्तरिक परिवर्तन

-श्रद्धेय संजीव कृष्ण ठाकुर जी

एक व्यक्ति मुझसे एक दिन कह रहा था कि मैं साधु बनना चाहता हूँ। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ ऐसा कैसे सम्भव है? कि कोई व्यक्ति प्रयास करके साधु बन जाये। हम संसार में जब चाहें जो चाहें बन सकते हैं, तो क्या साधु भी इसी तरह से बना जा सकता है?

मुझे लगा अगर यह व्यक्ति साधु बन भी गया तो क्या यह उस परम शांति को प्राप्त कर पायेगा जो एक संत को प्राप्त होती है। ये व्यक्ति किसी दिन गृहत्याग करके भगवा वस्त्र धारण कर लेगा ओर समाज की मान्यताओं में यह साधु बन जायेगा।

पर असल में साधु बनने से नहीं बना जाता, भजन करते-करते, कन्हैया का नाम गाते-गाते, साधुता एक दिन घट जाती है। साधु प्रयास से नहीं बना जाता, यह तो भजन के प्रसाद से घटना घट जाती है। साधुता दिल में उतर जाती है।

- संन्यास वस्त्रों में नहीं अपितु वृत्ति में समाया होता है।
- संन्यास बाहर का परिवर्तन नहीं, आन्तरिक परिवर्तन का नाम है।
- समस्त वृत्तियाँ भगवद रस लेने को व्याकुल हो उठें, उस स्थिति का नाम संन्यास है।
- वस्त्र संन्यास सरल है, व्यवहार संन्यास कठिन है।
- किसी के प्रति कभी भी अमंगल भाव ना रखना संन्यास है।
- कर्मो का नहीं, कुकर्मो का त्याग संन्यास है।
- एकान्त में रहना संन्यास नहीं, अपितु सबसे प्रेम रखना संन्यास है।
- वस्तुओं में दोष नहीं, अपितु सारा संसार प्रभु का है, यह सोचकर स्वीकार करना संन्यास है।
- पत्नि, बच्चे सबको प्रभु का परिवार मानकर सेवा करना संन्यास है।
- चुप रहना संन्यास नहीं अपितु सबसे मीठा बोलना संन्यास है।

ये सब आचरण अगर आपके भीतर हैं तो आपकी गृहस्थी किसी सन्यासी से भी श्रेष्ठ है।

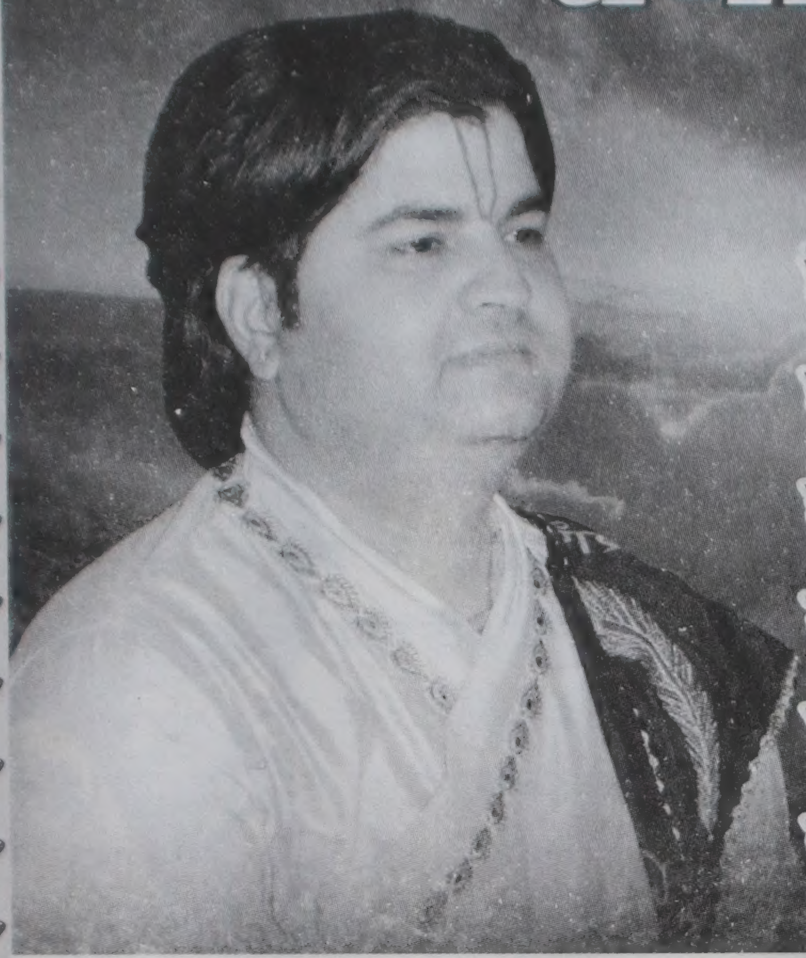
हरिद्वार जाने की बजाय आपका घर हरि का द्वार कैसे बने? बस इस पर विचार करो।



दर्पण आपको आपका चेहरा दिखाता है, चरित्र नहीं।

-स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज

संजीव चिंतन



दुनिया का कोई भी कर्म ना छोटा होता है, न बड़ा होता है। ना अच्छा होता है, न बुरा होता है। ना कोई कर्म पाप होता है, ना पुण्य होता है। कर्म केवल कर्म होता है, उसका उद्देश्य उसे पाप-पुण्य बनाता है। पाप-पुन्य तो भीतर चेतना में घटित हो जाता है। किसी भी कर्म का कारण (हेतु) ही उसे पाप-पुन्य बनाता है।

भगवान् श्री कृष्ण ने समय पर ना बोलने के कारण, असत्य का प्रतिकार ना करने के कारण पितामह से अन्त में शिकायत की है और कहा कि पितामह ऐसा मौन ना स्वयं का कल्याण करता है और ना समाज का। वहीं द्रोपदी को गलत बोलने के कारण और असमय में बोलने के कारण फटकार भी लगाई है। एक के ना बोलने से पाप हुआ है और एक के बोलने से पाप हुआ है।

आज प्रत्येक घर में भय, ईर्ष्या, संघर्ष, दुःख और अशांति का वातावरण है, उसका एक ही कारण है और वह है, प्रेम का अभाव। आग को आग नहीं बुझाती पानी बुझाता है। प्रेम से दुनिया को तो क्या दुनिया बनाने वाले को भी जीता जा सकता है। पशु-पक्षी भी प्रेम की भाषा समझते हैं। तुम प्रेम बांटो, इसकी खुशबू कभी खतम नहीं होती।

संजीव चिंतन

सुखी जीवन जीने का सिर्फ एक ही रास्ता है, वह है अभाव की तरफ दृष्टि ना डालना। आज हमारी स्थिति यह है, कि जो हमें प्राप्त है उसका आनंद तो लेते नहीं, वरन जो प्राप्त नहीं है उसका चिन्तन करके जीवन को शोकमय कर लेते हैं।

दुःख का मूल कारण हमारी आवश्यकताएं नहीं इच्छाएं है। हमारी आवश्यकताएं तो कभी पूर्ण भी हो सकती हैं मगर इच्छाएं नहीं।



हमारे ठाकुर जी के भक्त ना तो संसार के मिलने पर रोते हैं और नहीं मिल जाने पर छूट जाने के डर से परेशान रहते हैं। वे हर हाल में प्रसन्न हैं, मस्त हैं, आनंदित हैं, राजी हैं। हर हाल में खुश रहो, किसी भी क्षण उदास मत रहो, इन्द्रियां अभाव की ओर बार-बार तुम्हें ध्यान दिलाएंगी। तुम एक ज्ञानी की तरह मुस्कुराकर प्रत्येक क्षण जो मिला है उसके लिए प्रभु को धन्यवाद देते रहो।

श्री कृष्ण में कैसे भी हमारा चित्त लग जाये, एक बार उनसे सम्बन्ध बन जाये तो फिर कल्याण होने में देर नहीं लगती। ठाकुर जी को कुछ ना कुछ जरूर बनाओ। अर्जुन की तरह मित्र नहीं बना सकते हो तो दुर्योधन की तरह शत्रु भी बना लोगे तो भी कल्याण निश्चित है।

ऐसा अभ्यास बनाओ कि प्रभु का सुमिरण एक क्षण के लिए भी ना छूटे।



जलाएं अच्छाइयों के दीप

श्री लाजपत राय संभरवाल जी

दीपावली एक ऐसा त्यौहार है, जिसमें सभी आयु के लोग हर्षोल्लास के साथ भाग लेते हैं। अमावस्या के अंधकार को दूर करने के लिए हम पूजा स्थलों को प्रकाशित करते हैं और घर-बाहर में असंख्य दीप जलाते हैं। वातावरण में चारों ओर उमंग और उल्लास का रंग बिखरा होता है। वास्तव में, यह प्रकाश-उत्सव है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, राम लंका के राजा रावण को युद्ध में परास्त कर, हनुमान, लक्ष्मण और सीता के साथ अयोध्या लौटते हैं। अयोध्या की जनता अपने न्यायप्रिय राजा राम के स्वागत में अपने-अपने घरों में दीप जलाती है। वास्तव में, इसक कथा के पीछे एक गूढ़ अर्थ छिपा हुआ है-मन से अज्ञानता रूपी अंधकार को मिटाना। अज्ञानता कहने से यहाँ मतलब है मन में दूसरों के प्रति द्वेष के स्थान पर प्रेम का भाव पैदा करना। प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न रहना ही इस त्यौहार का मुख्य संदेश है।

इस दिन देवी लक्ष्मी की पूजा, दीप प्रज्ज्वलित कर की जाती है। प्रकाश का संवाहक होने के साथ-साथ दीपक 'प्राणतत्व' यानी जीवन ज्योति का भी पर्याय है। इसीलिए इस पर्व को दीपावली कहते हैं। देवी 'लक्ष्मी' धन-सम्पदा और समद्धि की प्रतीक मानी जाती हैं। हमारे घरों में देवी लक्ष्मी की पूजा विधिवत रूप से स्त्रियां करती हैं। यदि हम पूजा की महत्ता समझें, तो इसमें स्त्रियों को सम्मान देने का संदेश छिपा हुआ है। यदि हम सच्चे मन से देवी लक्ष्मी की पूजा करते हैं, तो हमें घर या अपने आस-पास रहने वाली स्त्रियों या सहकर्मियों का आदर करना चाहिए।

दीपावली पर्व का आधार 'राम' हैं और राम का सद्चरित, पारिवारिक और सामजिक आदर्श हमारे लिए अनुकरणीय है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जीवन शील, शक्ति और सौंदर्य का अद्भुत समन्वय था। उनका जीवन समस्त विश्व के कल्याण की भावना से ओत-प्रोत था। विश्वकल्याण के लिए राम ने आसुरी शक्तियों का नाश किया था। राम जैसे आदर्श जननायकों से ही आदर्श समाज बन सकता है।

हम दीपावली के दिन दिया जलाते हैं। इसका अर्थ यह है कि यदि हमारे अंदर बुराईयां व्याप्त हैं, तो हम उन्हें जला डालें। बुराइयों को जलाकर अच्छाईयों के दीप जलाएं। दूसरों के प्रति ईर्ष्या-द्वेष नहीं, बल्कि स्नेह का प्रकाश भरें। तभी हम राम के जीवन का अनुकरण कर सकते हैं। जिस प्रकार हम श्रद्धा भाव से भगवान् की प्रतिमा के समक्ष दीप जलाते हैं, उसी प्रकार दूसरे व्यक्ति के



जो बहाने बनाना जानता है, वह और कुछ नहीं बना पाता।

-स्वामी रामदेव जी महाराज

प्रति भी हम श्रद्धा का भाव रखें। यह भी एक साधना है। क्योंकि हमें उदारता, त्याग, सहिष्णुता, क्षमाशीलता जैसे गुणों को आत्मसात करना होता है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा देने वाले इस मंत्र में हमारी समस्त भारतीय संस्कृति का संदेश है। प्रति वर्ष दीपावली के रूप में हम इसी संदेश को पुनः ध्यान में लाने की पुनरावृत्ति करते हैं। आइए, हम सब मिलकर यह प्रार्थना करें कि हे ज्योति पर्व! तुम्हारा स्वागत है। तुम हमारे मन, बुद्धि और आत्मा को ज्योतिर्मय करो। हम ईश्वर से यही प्रार्थना करें कि हमारा हृदय भी परपीड़ा के प्रति संवेदनशील हो। **हम अपने लक्ष्य प्राप्ति की दौड़ में जनहित और करुणा भाव को न भुलाएं। हममें मर्यादा पुरुषोत्तम राम जैसी नीति, साहस का भाव विकसित हो, अर्थात् हम 'राम' को 'रमा'-पाएं। साथ ही साथ, हम धर्म-सम्प्रदाय के भेदों, देश-विदेश की सीमाओं आदि को भूलकर संपूर्ण जगत को अपना समझें।**

"गोपाष्टमी" पर करें गौ सेवा

"गोपाष्टमी" भगवान श्रीकृष्ण द्वारा वत्स चारण लीला प्रारम्भ करने का पावन दिवस है। गौ और ब्राह्मणों के हितार्थ जब वह पूर्ण ब्रह्म गोपाल बनकर आये तो बाल्यकाल से ही माँ यशोदा व बाबा नन्द से गौ चारण करने की हठ करने लगे।

पुत्र के स्नेह वश माँ व बाबा द्वारा उन्हें सदैव ही रोक लिया जाता मगर जो आये ही गौ माता की सेवा के लिए थे, भला वो कहाँ मानने वाले थे। अंततः कार्तिक शुक्ला अष्टमी के पावन दिन, भगवान श्रीकृष्ण को गोपाल से वत्सपाल बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

माँ व बाबा से आज्ञा मिल गई और गोपाल द्वारा वत्सचारण लीला का प्रारम्भ हो गया। वही पावन दिन "गोपाष्टमी" पर्व के रूप में आज भी मनाया जाता है।

"गोपाष्टमी" के पावन अवसर पर आप भी अपनी सेवाएं हरा चारा, भूषा, गुड़, खल, चोकर इत्यादि रूपों में "समर्पण गौशाला" पर पल रही निराश्रित वृद्ध व असहाय गौमाताओं की सेवार्थ प्रदान कर अवश्य ही पुण्य के भागी बनें।



खुद को बेहतर बनाने के लिए इतना समय दें कि आपके पास दूसरों की बुराई करने का समय ही न बचें।

—स्वामी विवेकानन्द जी

अन्तर्मन की शुद्धता का पर्व "दीपावली"

श्री गोपाल चतुर्वेदी जी

भारतीय संस्कृति में दीप प्रज्वलन व ज्योति या प्रकाश का अत्यधिक महत्व है। प्रकाश ज्ञान व आध्यात्मिक ऊर्जा का पर्याय है। हमारे देश में प्रत्येक कार्य का शुभारम्भ दीप जला कर ही होता है। दीपों का पर्व दीपावली अत्यंत हर्षोल्लास का पर्व है, जो कि समूचे देश में धनतेरस के निरन्तर पाँच दिनों तक अत्यधिक धूमधाम के साथ मनाया जाता है। दीपावली कार्तिक अमावस्या अर्थात् घोर अंधकार के दिन आती है, जिसे कि अज्ञानता व विकारों का प्रतीक माना गया है। इसीलिए इस दिन प्रत्येक घर में दीपों को जलाये जाने की होड़ सी लग जाती है। हमारे धर्म-शास्त्रों में यह लिखा हुआ है '**असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतंगमय।**' अर्थात् हे ईश्वर! आप हमें असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से मोक्ष की ओर ले चलिए। दीपावली पर गणेश व लक्ष्मी की पूजा का विधान है। यह दोनों ही देव हमारे जीवन की सम्पूर्णता व सफलता के पर्याय हैं। लक्ष्मी कर्म की प्रेरणा स्त्रोत व गणेश हमारे कर्म को सिद्धि तक पहुँचाने वाले हैं। वस्तुतः हम सभी एक अजर, अमर, अविनाशी आत्मा हैं और यह अविनाशी आत्मा ही सच्चा दीपक है। अतः हम सभी को सच्ची दीपावली मनाने के लिए स्वयं में स्थित महाज्योति अर्थात् ईश्वर से मिलन कर शांति, प्रेम व सद्भावना का प्रकाश चारों ओर फैलाना चाहिए। भगवान् बुद्ध ने कहा था कि 'अप्प दीपो भव' अर्थात् अपने दीपक स्वयं बनो। दीपावली का पावन पर्व इसी ज्योति साधना की पावन प्रेरणा एवं लक्ष्मी का प्रतीकात्मक रूपान्तरण है।

आज हमारा समूचा समाज अविश्वास व भ्रष्टाचार में डूबा हुआ है। चहुँ ओर महंगाई, अत्याचार, अराजकता, आतंकवाद, हत्या, लूपपाट आदि दुष्प्रवृत्तियों का बोलबाला है। हमारे देश ने ज्यों-ज्यों प्रगति की है त्यों-त्यों गरीब और अधिक गरीब एवं अमीर और अधिक अमीर होते चले जा रहे हैं। दीपावली की सांस्कृतिक उत्सव धर्मिता ने आज धन व सामर्थ्य के भौंडे प्रदर्शन का रूप ले लिया है। यही कारण है कि दीपावली के कई दिन पूर्व से करोड़ों-अरबों रुपयों की आतिशबाजी चलाने एवं विद्युत साज-सज्जा में अनाप-शनाप धन, ऊर्जा व जन हानि होती है। इस विषय पर हम सभी को गंभीरता से विचार करना चाहिए। ऐसे त्रासद व विषमता के परिपेक्ष्य में हम सभी को अपने-अपने घरों के साथ अपने-अपने मनों की सफाई करने की भी आवश्यकता है। हमारे अन्दर जो बुराइयाँ



माँ बाप का दिल जीत लो कामयाब हो जाओगे वरना सारी दुनियाँ जीतकर भी हार जाओगे।

–डा0 श्री कैलाश मानव

समाविष्ट हैं उन्हें हम अपना आत्मलोचन कर बाहर निकालें। **क्योंकि दीपावली अन्तर्मन की शुद्धता का पर्व है। जब तक बुराई पर अच्छाई की और अवगुणों पर गुणों की विजय नहीं होगी तब तक दीपावली मनाये जाने की कोई सार्थकता नहीं है।** इसके साथ ही हम सभी को भूख, गरीबी, अशिक्षा, अनैतिकता, अपराध व भ्रष्टाचार आदि के विरुद्ध नैतिकता व ईमानदारी के दीये को जलाने की परम आवश्यकता है। हमारी कामना है कि दीपावली आप सभी को दीप्ति, आलोक, ज्योतिर्मय आभा, आत्म बोध व इतिहास बोध दे। साथ ही यह दीप-पर्व आप सभी के चित्त, बुद्धि, विवेक और मन को प्रकाश से आप्लावित कर। आप सभी के मन में उम्मीदों व खुशियों का दीया निरंतर जलता रहे। इसी सबके साथ आप सभी को दीपावली कीी अनन्त शुभकामनाएं।

बरसें खुशियां घर-आंगन,
लक्ष्मी पधारें आपके द्वार।
कर दे रोशन हर मन को,
दीपों का यह पावन त्यौहार।।

मन्दिर में कोउ मस्जिद में, कोउ घर के भीतर दीप धरे हैं।
गंगाजल में यमुना जल में, नित असंख्य ही दीप तरे हैं।
क्यों उनकी सुधि कोउ न लेत, जो राह अंधेरी में औंधे परे हैं।
चलो इक दीप जलायें वहाँ, जहाँ लोग गिरें चलने से डरे हैं॥

भारतीय गाय का गिनीज बुक में नाम

विदेशों में भारतीय नस्ल की गायों पर अनेक शोध हो रहे हैं। इजराइल ने गीर नस्ल की भारतीय गाय से 120 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन करके सिद्ध कर दिया है, कि संसार में भारतीय गाय के समकक्ष कोई नहीं है। संसार की सर्वश्रेष्ठ गाय भारतीय ही है। इस गाय का नाम "गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड" में दर्ज है।



दूसरों को सहयोग देना ही उन्हें अपना सहयोगी बनाना है।

-श्री रमेश भाई ओझा



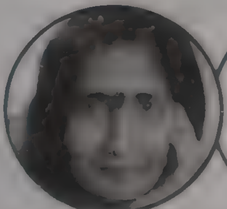
सहज सनेह बिवस रघुराई

पं. राम किंकर उपाध्याय जी

जिस समय निषाद ने यह सुना कि श्रीराम को वन दिया गया है तो उनमें प्रभु से मिलने की तीव्र लालसा जागृत हुई। अब प्रश्न यह है कि वे विषयी हैं या साधक कि सिद्ध?और इसका उत्तर है कि ये इन तीनों में से नहीं है अपितु इनके लिए तो गोस्वामी जी ने एक नए शब्द का प्रयोग किया-'सहज सनेह।' सहज सनेह का अर्थ है कि जैसे मछली का जल के प्रति जो प्रेम है, वह जल के महात्म्य ज्ञान या मछली की किसी साधना का परिणाम न होकर सहज सनेह है। या जैसे चन्द्रमा के प्रति चकोर का अथवा स्वाति नक्षत्र के प्रति जो चातक का स्नेह है, वह भी सहज स्नेह है। अब जरा विचार कीजिए कि जिन निषादराज को मार्गदर्शक बनाकर श्रीभरत भगवान राम तक पहुँचे, उनका स्नेह है क्या! वह किस श्रेणी का स्नेह है?और यह बड़ी ऊँची बात है।

यदि कोई ऊँचे पद पर आसीन हो, सत्ता के सिहासन पर बैठा हुआ हो तो उसके स्वागत के लिए भीड़ एकत्रित हो ही जाती है। पर जब किसी का पद छिन जाय, सिंहासन छिन जाय, तब उसकी दशा कैसी हो जाती है, इसका दर्शन समाज में हम लोगों को होता ही रहता है। जो व्यक्ति पद के नाते प्राप्त सम्मान को अपना सम्मान को अपना सम्मान मानने की भूल कर बैठता है, वह बाद में बड़ा दुःखी होता है। वह सोचता है कि पहले तो लोग इतना महत्त्व देते थे, पर अब तो मिलने पर भी आँखें चुराते हैं!

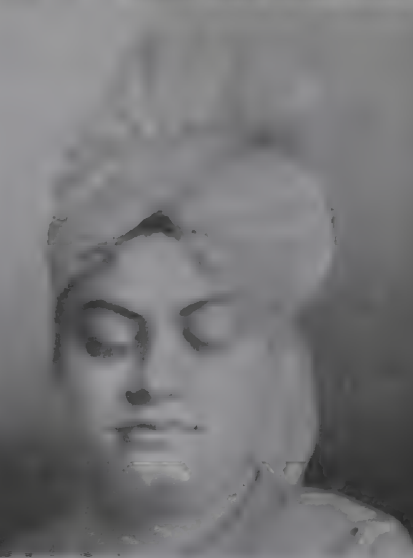
अब इस सन्दर्भ में आप कल्पना कीजिए-भगवान राम तो उस स्थिति में वन की ओर जा रहे हैं, जब उनका राज्य छिन गया है। इसलिए निषादराज को सोचना चाहिए था कि हम इनसे दूर ही रहें तो अच्छा है। **किन्तु 'सहज स्नेह' का अर्थ है कि उस स्नेह में न तो कोई कारण है, और न ही अच्दा-बुरा अथवा लाभ-हानि की कोई गणना है। पिता ने राज्य देकर वन दिया है यह सुनकर भी जिसका स्नेह घटा नहीं अपितु बढ़ा ही है, सचमुच वह निषाद, वह केवट तो धन्य है।**



आपका खुश रहना ही आपकी बुराई चाहने वालों
को सबसे बड़ी सजा है। -दीदी माँ साध्वी ऋतंभरा जी

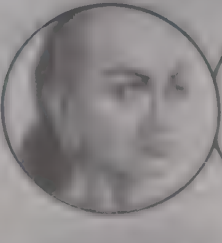
योग नहीं कर्मयोग

स्वामी विवेकानन्द जी महाराज



प्रत्येक कार्य के फल में भलाई और बुराई मिली रहती है। कोई भी अच्छा काम ऐसा नहीं होता जिसमें बुराई का कुछ-न-कुछ सम्बन्ध न रहता हो। जैसे अग्नि धुएँ से आवृत्त रहती है, उसी प्रकार कर्म में कोई-न-कोई दोष लगा ही रहता है। हमें ऐसे कार्यों में ही रत रहना चाहिए जिनमे भलाई सब से अधिक और बुराई बिलकुल कम हो। अर्जुन ने भीष्म और द्रोण का वध किया। यदि यह न किया जाता तो दुर्योधन पर विजय प्राप्त नही होती, बुराई की शक्तियों की अच्छाई की शक्तियों पर जीत हो जाती और इस प्रकार देश पर विपत्तियों के काले बादल मँडराने लगते। अभिमानी और अन्यायी राजाओं के एक दल के द्वारा राज्य का शासन बलपूर्वक हड़प लिया जाता और देश की जनता पर दुर्भाग्य की कलिमा फैल जाती। इसी प्रकार श्रीकृष्ण ने भी कंस, जरासंध इत्यादि अत्याचारियों का संहार किया, पर उनका एक भी कार्य उनके स्वयं के लिए नहीं था। उनका प्रत्येक कार्य दूसरों की भलाई के लिए ही था। हम दिये के प्रकाश में गीता का पठन कर रहे है, पर अनेक पतंगे दिये से जलकर मरते जा रहे हैं। इसी से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक कर्म में कुछ-न-कुछ दोष रहता ही है। जो अपना क्षुद्र अहं-भाव भूलकर कार्य करते हैं, उन पर इन दोषों का प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि वे संसार की भलाई के लिए कर्म करते हैं। **निष्काम और अनासक्त होकर कार्य करने से हमें परम आनन्द और मुक्ति की प्राप्ति होती है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कर्मयोग के इसी रहस्य की शिक्षा दी है।**

जिस युवक में संकल्प, साहस और कुछ कर गुजरने की तमन्ना होती है, वह परिस्थितियों के सांचे में ढलना नहीं, वक्त के सांचे को बदलना जानता है।



जहाँ बुद्धि प्रयोग करने की आवश्यकता है,
वहाँ बल प्रयोग से कोई लाभ नहीं होता है।

-आचार्य चाणक्य



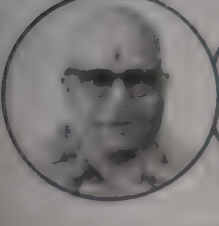
नारी

मैं प्रकृति, मै दुनियाँ
फिर भी कमजोर और असहाय
इसलिए नहीं कि मुझमें साहस नहीं
इसलिए की मुझमें नफरत नहीं।

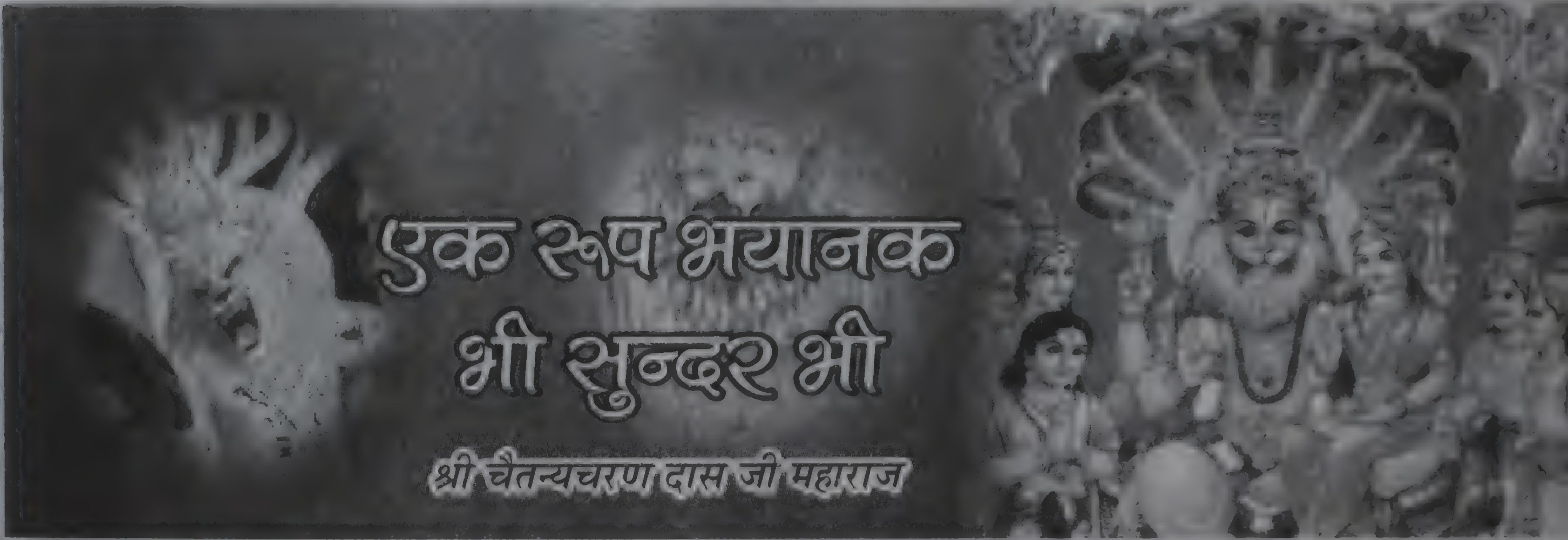
मैं जननी, मैं देवी
फिर भी पैरों तले मेरी जुबाँ
इसलिए नहीं कि मुझमें आवाज नहीं
इसलिए कि मुझमें शोर नहीं।

मैं चाहत, मैं दुआ
फिर भी बदचलन और कुल्टा
इसलिए नहीं कि मुझमें आग नहीं
इसलिए की मुझमें जलन नहीं।

मैं श्रृष्टि कि रचनाकार
फिर भी हाथों से बेकार, पैरों से लाचार
इसलिए नहीं कि मुझमें जज्बा नहीं
इसलिए कि मै निष्ठुर नहीं, स्वार्थी नहीं, कठोर नहीं॥



लाठी व पत्थरों से हड्डियाँ टूटती हैं परन्तु शब्दों से
प्राय: सम्बन्ध टूट जाते हैं।
-स्वामी अखण्डानंद सरस्वती जी महाराज



एक रूप भयानक भी सुन्दर भी

श्री चैतन्यचरण दास जी महाराज

श्री नृसिंह भगवान् का अतुल्नीय रूप है, न केवल वैदिक संस्कृति में अपितु संसार के सभी वर्णित धर्मों में भी। श्रीमद्भागवत उनके अद्भुत रूप का वर्णन इस प्रकार करती है। ऐसी जिव्हा, जो तलवार के समान घूमती थी, सूर्य से भी तेजतर्रार आँखें, गर्दन पर फैले बाल, जो भयंकर मुख को चौड़ाई प्रदान करते थे, लम्बे खड़े कान एवं ऐसी भीषण गर्जना जिसके सुनते ही हाथियों के झुण्ड भी भाग जायें।

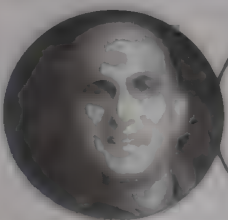
किन्तु भक्त प्रहलाद के लिए भयंकर स्वरूप सुन्दरता और आनन्द का प्रतीक था, जिनके गुणगान में उन्होंने भक्तिभरी सुन्दर प्रार्थनायें गाईं। महान् वैष्णव आचार्य श्रीधर स्वामी ने श्री नृसिंहदेव में एक साथ पाई जाने वाली रौद्रता और सुन्दरता की व्याख्या की है। **एक शेरनी अन्य प्राणियों के लिए भयावह किन्तु अपने शावकों के प्रति अत्यन्त स्नेह से भरी होती है।**

श्रीनृसिंहदेव का क्रोध उनका भक्तों के प्रति प्रेम, उनकी रक्षा हेतु चिन्ता, उन्हें कष्ट देने वाले असुरों के प्रति का प्रकटीकरण है। इसलिए श्रीनृसिंहदेव एक ही साथ रौद्र और सौम्य दोनों दिखते हैं।

श्रीनृससिंहदेव का अद्भुत रूप तब प्रकट हुआ जब उनके और उनके शुद्ध भक्त प्रहलाद के बीच प्रेम के आदान-प्रदान अपने चरमोत्कर्ष पर था। यह कथा दैवी और मानवीय प्रेम की सर्वाधिक नाटकीय कथाओं में से एक है।

गाय के दूध से ठीक होगा पेट का कैंसर

एक ताजा रिसर्ज में वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि गाय के दूध में एक ऐसा पेप्टाइड होता है, जो मनुष्य के पेट के कैंसर सेल को मारने में सक्षम है। ताईवान में किए गए इस शोध में वैज्ञानिकों ने गाय के दूध से पेप्टाइन फ्रैगमेन्ट ढूँढ निकाला है जिसका नाम लैक्टोफैरीसिन बी25 है। खोज में पता चला है कि इस पेप्टाइड में मानव शरीर में होने वाले पेट के कैंसर से लड़ने की क्षमता होती है।



अपनी दृष्टि हमेशा ऊँची रखने का प्रयास करो
आपका मस्तक स्वत: ऊँचा रहेगा।
-स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज



प्रेमी बनो, पुजारी नहीं

मुनि पुलक सागर जी महाराज

मंदिरों में पुजारी तो बहुत मिल जाएंगे लेकिन परमात्मा के प्रेमी नगण्यप्राय मिलेंगे। पुजारी होना तो केवल औपचारिकता है, मंदिर की व्यवस्था मात्र है लेकिन प्रेमी होना तो बिलकुल अलग बात है। पुजारी अगर भगवान की एक दिन पूजा न करे, तो वह दूसरे दिन पूजा करके भी काम चला लेगा लेकिन प्रेमी तो ईश्वर के इतने निकट होता है कि पूजा न करे तो दिन भर उसका खाने-पीने में मन नहीं लगता। इसलिए मैं कहता हूँ कि पूजारी नहीं, प्रेमी बनिए। पुजारी तो सारी दुनिया बनी है लेकिन प्रेमी तो राजस्थान की मीरा ही बन पाई, जिसने **'माई री मैं तो लियो 'गोविंदा मोल'** और **'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई'** कहकर संसार की हदें दिखला दी। इसी प्रकार प्रभु! प्रेमी चंदनबाला ने भी बेड़ियों में बंधकर भगवान महावीर की प्रेम भक्ति की मिसाल पेश कर दी। प्रेम का कोई संविधान नहीं है।

प्रेम में बन्धन, री... रिवाज, परम्पराएं, व्यवस्था आदि की कोई बेड़ियां और अवरोध काम नहीं करते। इसलिए कहा गया है प्रेम गली अति सांकरी जा में दो न समाएं। प्रेम में भक्त और भगवान के बीच तीसरे की गुंजाइश ही कहाँ है?कौन है ऐसा जिसने प्रेम को स्वीकार न किया हो। कबीर ने ढ़ाई आखर के लिए पूरा जीवन समर्पित कर दिया और कह दिया कि पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा,पंडित भया न कोय ढाई आखर प्रेम का, पढे सो पंडित होय। रहीम ने प्रेम मार्ग के पथिकों की जुगलबंदी करते हुए कहा-**रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाए, टूटे से फिर ना जुड़े जुड़े गांठ पड़ जाए**। मीरा कहती है- **मैं तो प्रेमी दीवानी**। जीजस भी इसी प्रेम पथ के मुसाफिर हैं। वे कहते हैं- **लव इज गॉड**। भगवान महावीर ने भी तो प्रेम को ही पूजा-भजा और जपा है। प्रेम की प्रतिछाया के रूप में करूणा और अंहिसा के प्रतिपादक महावीर ने संसार को प्रेम के आनन्द सागर में करुणा और अहिंसा के ऐसे दो महारत्न दिए, जिन्हें विश्व आज भी **पायो जी मैंने राम रतन धन पायो** के साथ गाता और गुनगुनाता है। इंसान यदि समस्त जीवों, प्राणियों और वनस्पति से प्रेम न करे तो उसका माला जपना व्यर्थ है। **यदि कार्य की व्यस्तता के कारण मंदिर व मस्जिद, गिरिजा अथवा गुरूद्वारा न जा पाओ तो किसी रोते हुए बच्चे के आँसू पोंछ लेना, तुम्हारी इबादत भी हो गई, अरदास भी हो गई और प्रार्थना भी हो गई।**



किसी भी वस्तु की सुन्दरता आपकी मूल्यांकन करने की योग्यता में छिपी हुई है।

-स्वामी राम कृष्ण परमहंस



समस्या का कारण जानो

–स्वामी अवधेशानन्द गिरी जी महाराज

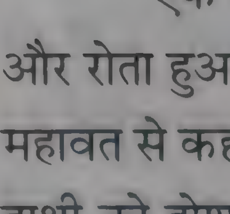
मानव जीवन समस्याओं से घिरा होता है। उसे हर वक्त कोई न कोई समस्या परेशान करती रहती है। कुछ समस्याओं का समाधान आसानी से मिल जाता है तो कुछ समस्याएं सुलझाते वक्त और भी अधिक विकराल हो जाती हैं। कुछ समस्याएं व्यक्ति खुद ही सुलझा लेता है तो कुछ वह दूसरों के सहयोग से सुलझा लेता है तो कुछ वह दूसरों के सहयोग से सुलझा लेता है।

कभी-कभी कुछ समस्याएं ऐसी भी होती हैं जिनका समाधान व्यक्ति नहीं खोज पाता है लेकिन उसी समस्या का हल दूसरा व्यक्ति तुरंत ही बता देता है। इसका कारण यह है, कि व्यक्ति स्वयं की समस्याओं की जड़ में नहीं जा पाता है जबकि दूसरा व्यक्ति उस समस्या की जड़ को न सिर्फ पहचान लेता है बल्कि समाधान भी खोज लेता है।

एक संत एक बार यमुना किनारे टहल रहे थे। उन्होंने देखा कि किनारे पर एक हाथी बेहोश पड़ा हुआ है और रोता हुआ महावत भगवान और देवी-देवताओं से उसे फिर जीवित करने की प्रार्थना कर रहा है। संत ने महावत से कहा, "हाथी के सिर पर पानी डालो, यह ठीक हो जाएगा।" महावत ने ऐसा ही किया। कुछ देर बाद हाथी को होश आ गया और वह उठ बैठा। महावत ने लपककर संत के चरण पकड़ते हुए कहा, "महाराज, आपकी कृपा से मेरा हाथी जिन्दा हो गया।"

संत ने कहा,"हाथी मरा नहीं था। उसके दिमाग में गर्मी चढ़ जाने से मूर्च्छित हो गया था। तुमने उसके सिर पानी डाला तो उसे होश आ गया, क्योंकि पानी की ठंडक से दिमाग की गर्मी दूर हो गई। इसमें मेरी कृपा या चमत्कार नहीं है।

हर व्यक्ति को पहले समस्या का कारण जानना चाहिए, फिर उस कारण को दूर करना चाहिए। कारण जाने विना रोग का निदान नहीं हो सकता और वह कार्य भी बिगड़ सकता है। **अतः खूब सोच-विचार कर कार्य करें और किसी चमत्कार के चक्कर में न पड़े।**



ऐसी बात सुनों ही मत जो आपकी खुशी को नष्ट करने वाली हो।

–पूज्य डोंगरे जी महाराज

सम्पन्न कार्यक्रम

अयोध्या में पुनः राम जन्म

प्रस्तुति - सुनील पंत जी

परम श्रद्धेय संजीव कृष्ण ठाकुर जी महाराज के मंगलमय पावन सानिध्य में दिनाँक 31 जुलाई से 7 अगस्त 2014 तक श्री राम कथा का दुर्भल संयोग श्री जानकी महल ट्रस्ट धर्मशाला के प्रांगण में, वसुदेव घाट, मोक्षदायक अयोध्या धाम में सम्पन्न हुआ।

यह सम्पूर्ण कार्यक्रम एक नहीं अनेक विशिष्ट योगों से पूर्ण रहा। पावन अयोध्या धाम, सरयू जी का निर्मल तट, राम स्नेही संतों की मंगलमय समुपस्थिति और कलिमल भंजन पावन श्री राम कथा का ऐसा दुर्लभ योग कि देवता भी जिसके लिए तरस जाते हैं।

श्री राम बारात पर निकली शोभा यात्रा की भव्य झाकियाँ जिसने भी देखी, बस देखता ही रह गया।

भगवान श्री राम जन्म प्रसंग पर महाराज श्री ने कहा कि ''यहाँ पर उपस्थित हम सारे लोग बड़े ही धनभागी हैं, जो हम इस पावन धरा अयोध्या पर आज पुनः प्रभु राम का जन्म महोत्सव मना रहे हैं। जो सौभाग्य कभी महाराज दशरथ, महारानी कौशल्या, अन्य रानियों व अयोध्या वासियों को प्राप्त हुआ, आज वही सौभाग्य हम और आप सब को प्राप्त हो रहा है।''

सम्पूर्ण कार्यक्रम अति आनन्द प्रदायक रहा। देश के कोने - कोने से हजारों की संख्या में पधारे रसिक जनों ने राम नाम की गंगा में डुबकी लगाकर अपने आपको सौभाग्य ाली अनुभव किया। इस कथा के मुख्य आयोजक का सौभाग्य श्री सुभाष भगत जी, सीता राम सुभाष बगीची, पुन्हाना (हरियाणा) वालों को प्राप्त हुआ।

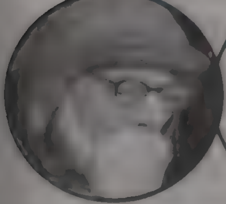
मूर्ति नहीं मूर्त पूजा का आह्वान

परम गौभक्त श्रद्धेय संजीव कृष्ण ठाकुर जी महाराज का मंगलमय पावन सानिध्य दिनाँक 27 अगस्त से 2 सितम्बर 2014 तक व्रजराज नगर (झारसुगुड़ा) उड़ीसा वालों को प्राप्त हुआ।

नारायण सेवा संस्थान में उपचाररत विकलांग भाई-बन्धुओं के सहयोगार्थ इस कथा का देश-विदेश में आस्था चैनल द्वारा दोपहर 3:00 बजे से सायं 6:30 बजे तक सीधा प्रसारण भी किया गया। यह श्रद्धेय महाराज श्री की ओजस्वी वाणी का ही प्रभाव था कि देश ही नहीं अपितु विदेशों से भी अनेक महानुभावों ने इस सेवा यज्ञ में अपनी आहुतियाँ प्रदान की।

कथा क्रम में महाराज श्री द्वारा अनेकों बार पर सेवा व परोपकार जैसे विषयों पर मार्मिक चर्चा की गई व बार-बार सेवा के महत्त्व को बतलाया गया। कथा क्रम में महाराज श्री ने कहा कि-"आज के समय में भी सेवा करने वालों की कोई कमी नहीं है। फर्क सिर्फ इतना है, कि पहले लोग मूर्त सेवा में विश्वास रखते थे और आज मूर्ति सेवा में विश्वास किया जाता है। पहले लोग नर में भी नारायण के दर्शन किया करते थे मगर आज नारायण को भी लोग नर समझने लगे हैं।

मेरा मूर्ति सेवा से कोई विरोध नहीं है मगर मूर्त सेवा के अभाव में केवल मूर्ति सेवा कदापि फलदायी नहीं हो



यदि आप केवल अपना ही ध्यान रखेंगे तो दूसरे
आपका ध्यान रखना बंद कर देंगे।

-आचार्य विनोवा जी

सकती है। कार्यक्रम की भव्यता अपने आप में अवर्णननीय है।

इस पावन महोत्सव के आयोजन का परम सौभाग्य श्री वृजलाल मक्खन लाल गोयल एवं समस्त गोयल परिवार(कैमरी वाले) को प्राप्त हुआ।

दिल्ली (रोहिणी) में हुआ कृष्ण जन्म

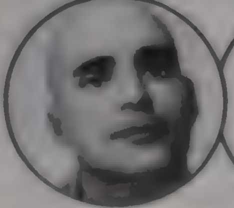
श्री खाटू श्याम सेवा समिति, से॰ 24 रोहिणी दिल्ली के तत्वावधान और परम गौभक्त श्रद्धेय संजीव कृष्ण ठाकुर जी महाराज के मंगलमय पावन सानिध्य में, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अति पावन सुअवसर पर विशाल श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन दि. 14 से 21 अगस्त 2014 तक जन्माष्टमी पार्क, सेक्टर 24 रोहिणी में सम्पन्न हुआ।

शुभारंभ दिवस पर मातृ शक्तियों द्वारा विशाल शोभा यात्रा, प्रतिदिन कथा समापन के बाद देश के सुप्रसिद्ध भजन गायकों की रसपूर्ण भाव गंगा, प्रत्येक दिन श्याम बाबा के अलौकिक श्रृंगार व ज्योति दर्शन और कथा पंडाल में सजी विभिन्न देवीय झाँकियों के दर्शन इस महोत्सव को और भी अनुपम, अलौकिक, अतिविशिष्ट व चिरस्मरणीय बना गये।

सर्म्पण गौशाला के सेवार्थ इस कथा का संस्कार चैनल द्वारा दोपहर 3:30 बजे से सायं 7:00 बजे तक सीधा प्रसारण किया गया। 20 अगस्त का दिन तब और भी विशिष्ट और गौरवपूर्ण बन गया, जब देश के दो महान संत गीता मनीषी श्री ज्ञानानंद जी महाराज और जैन संत पूज्य लोकेश मुनि जी महाराज ने भी कार्यक्रम में पधार कर समस्त देश वासियों से गौरक्षा का आहवान किया। कृष्ण जन्म के प्रसंग पर महाराज श्री ने कहा कि:- "यह हम सबका परम सौभाग्य है कि जो सौभाग्य कभी व्रजवासियों को प्राप्त हुआ कृष्ण जन्मोत्सव मनाने का वही सौभाग्य, वही आनन्द हमको और आप दिल्ली वासियों को दिल्ली में बैठकर ही प्राप्त हो रहा है। तब कृष्ण जन्म मथुरा में हुआ था और आज दिल्ली सेक्टर 24 के इस पवित्र प्रांगण में हुआ है।" गौमाता की रक्षा व संवर्द्धन का आवहान भी बार-बार मंच से महाराज श्री के द्वारा किया गया। भावपूर्ण भजन प्रवाह होते ही पूरा पंडाल हिलौरें लेने लगता और अपने आपको झूमने से न रोक पाता।

समापन दिवस पर गौ चिंतन व फूल होली महोत्सव के साथ इस भव्य आयोजन का विसर्जन हुआ।

- **अति भोगी मत बनो, जरा योगी भी बनो ताकि आपको रोगी बनने से मुक्ति मिल सके।**
- **पक्के इरादे तकदीर बदल देते हैं, किस्मत मोहताज नहीं होती हाथ के लकीरों की।**
- **पैर की मोच और छोटी सोच इंसान को कभी आगे नहीं बढ़ने देती।**
- **दुनिया में रहने की सबसे अच्छी दो जगह- या तो किसी के दिल में रहो, या किसी की दुआओं में।**



हम नींद में सपने देखतें हैं लेकिन ईश्वर हमें हर दिन नींद से जगाकर उन सपनों को पूरा करने का अवसर देते हैं।

-स्वामी रामतीर्थ जी महाराज

समर्पण गोशाला के दान दाताओं की नामावली

श्री छगन लाल जी, मुक्तसर, पंजाब	3100/-
श्री मनीष पारिख जी, बडौदरा, गुजरात	3000/-
श्री रामेन्द्र पाल सिंह सिसौदिया, आगरा, ऊ॰प्र॰	2500/-
श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्निहोत्री जी, जयपुर (राजस्थान)	2100/-
श्रीमती मुन्नी देवी परमार जी, गुड़गाँव, हरियाणा	2100/-
श्री दिलीप वर्मा जी, कंकाली, मथुरा (ऊ॰प्र॰)	1600/-
श्रीमती किरन कक्कर जी, सरिता बिहार, नई दिल्ली	1100/-
श्री राकेश शेरा जी, उज्जैन, (म॰प्र॰)	1100/-
श्रीमती किरण चाणक्य जी, बेलगाम, कर्नाटक	1100/-
श्री रियासत अली जी, कुम्हरई, हाथरस (ऊ॰प्र॰)	1100/-
श्री प्रमोद कुमार अग्निहोत्री, कुम्हरई, हाथरस (ऊ॰प्र॰)	1100/-
श्री विनोद कुमार अग्निहोत्री, कुम्हरई, हाथरस (ऊ॰प्र॰)	1100/-
श्री उमाशंकर अग्रवाल जी दुर्ग, छत्तीसगढ	1100/-
श्रीमती आशा एम॰ शर्मा जी, अहमदाबाद, गुजरात	1100/-
श्री आर॰सी॰ गर्ग जी, शाहदरा, दिल्ली	1100/-
श्री उमा शंकर मिश्रा जी, लखनऊ (ऊ॰प्र॰)	1100/-

एक वर्ष के लिये गाय गोद लेने वालों की सूची

श्री कुलदीप सूद जी, द्वारका, नई दिल्ली, 5 गाय
श्रीमती दमयन्ती चौहान जी, लैस्टर यू.के., 3 गाय
श्री रमेश कांता जी, पानीपत, हरियाणा, 1 गाय
श्री अर्पित एवं रविंद्र काल्या जी, भीलवाड़ा, राजस्थान, 3 गाय
श्री राम मूर्ति मैनेरो जी,नई दिल्ली 1 गाय
श्री अनिरुद्ध द्विवेदी जी, गुड़गाँव, हरियाणा, 1 गाय
श्री मुरारी लाल खेतान जी, कोलकाता (पं.बं.) 1 गाय
श्रीमती सविता सक्सेना जी, मालवीय नगर (नई दिल्ली) 1 गाय
श्री किशोरी देवी जी, गुड़गांव (हरियाणा) 1 गाय
श्री वी॰के॰ मेहता जी, आजाद नगर (नई दिल्ली) 1 गाय
श्री राजकुमार गर्ग जी, गुड़गाँव, हरियाणा, 1 गाय
श्रीमती योगेश्वरी देवी जी, सोनभद्र (उ.प्र.) 1 गाय
श्रीमती रेखा रस्तोगी जी, अहमदाबाद (गुजरात) 1 गाय
श्रीमती नीना सूद जी, द्वारका, नई दिल्ली, 5 गाय
श्री मोहन कुमार जैसवाल जी, देवघर, झारखण्ड, 1 गाय
श्रीमती सावित्री देवी जी, सिरसा, हरियाणा, 1 गाय
श्री गोपाल लाल जी, झालावर, राजस्थान, 1 गाय
श्री सत्यनारायण माहेश्वरी जी, गुड़गाँव, हरियाणा, 1 गाय
श्री मोहन किशोर शर्मा जी, कोटा (राज.) 1 गाय
श्रीमती राजेश्वरी जी, अलीगढ़, भमोला (उ.प्र.) 5 गाय
श्री एस॰पी॰ अग्रवाल जी, जबलपुर (म.प्र.) 1 गाय
श्री ओम प्रकाश जी, सिरसा, हरियाणा, 1 गाय
श्री आनन्द कुमार माँगिया जी, कमला नगर, दिल्ली, 1 गाय
श्री गिरधारी लाल श्रीवास्तव जी, लखनऊ,ऊ॰प्र॰, 1 गाय
श्री एम॰के॰ श्रीवास्तव जी, जबलपुर (म.प्र.) 1 गाय
श्री अजित श्रीवास्तव जी, 1 गाय



कोई भी वस्तु स्वयं खतरनाक नहीं होतीं परन्तु मानव के अन्दर छिपा क्रोध ही उन्हें हानिकारक बना देता है।

-मुनि तरुण सागर जी

छः माह के लिए गाय गोद लेने वालों की सूची

श्रीमती रुचि कक्कर जी, मालवीय नगर, नई दिल्ली, 1 गाय
श्री गोपाल सिंह जी, किदवई नगर, कानपुर, 1 गाय
श्रीमती मोनिका के॰ वाल्की जी मुम्बई, महाराष्ट्र, 1 गाय
श्री सुनील एवं सुनीता क्षेत्रपाल जी 1 गाय, नई दिल्ली
श्री कमल कांत जी, भागल पुर, बिहार, 1 गाय
श्री भगवती कन्नुभाई चौहान,मुम्बई(महा॰) 1 गाय
श्रीमती अमरवती शर्मा जी, गुड़गाँव, हरियाणा, 1 गाय
श्री विश्व नाथ सिंह जी, रोहताश, बिहार, 1 गाय
श्री भगवान सिंह कथयात जी, लखनऊ (ऊप्र॰), 1 गाय
श्री मंगल राम सिंधु जी, अजमेर, राजस्थान, 1 गाय
दीपक इंजीनियरिंग वर्क्स, मरोल नाका, मुम्बई (महा॰), 1 गाय
श्रीमती पुष्पा देवी अग्रवाल जी, दुर्गापुर, छत्तीसगढ, 1 गाय
श्रीमती राधा रानी जी, फैजाबाद, अयोध्या, 1 गाय
श्री प्रभाकर वारवाडे, साकेत नगर, नागपुर, महाराष्ट्र, 1 गाय
श्री मंगल घुले जी, अहमद नगर, महाराष्ट्र, 1 गाय
श्री जयंती लाल पाडिया जी, 1 गाय
श्री राम चरन जी S/O शिवचरन जी, राजगढ (राज.) 1 गाय
श्री संदीप गोपाल सावंत जी, रायगढ, महाराष्ट्र, 1 गाय
श्री भगवती प्रसाद मिश्र जी, शंताक्रुज (ई.) मुम्बई, 1 गाय
डा॰ श्री अशोक खम्बाडिया, घाट कोपर, मुम्बई, 1 गाय
श्री वी॰एम॰ भाटिया जी, चन्द्र नगर, मुरादाबाद(ऊप्र॰), 1 गाय

मासिक दानदाताओं की सूची

श्री दिनेश अग्रवाल जी, नई दिल्ली
श्री सुजीत कुमार मित्रा जी, नेहरू पैलेस, नई दिल्ली
श्रीमती पुष्पा पांचाल जी, उज्जैन (म॰प्र॰)
श्री राम सागर वर्मा जी, हेमू नगर (छ॰ग॰)
श्रीमती सुनीता कैलाश सिंह जी, मुम्बई, महाराष्ट्र
श्री मुक्खी सिंह जी, कोसीकलां, मथुरा (ऊप्र॰)
श्री राम मिलन कोर्ली जी, गुना (म॰प्र॰)

सर्मपण गौशाला परिवार आप सभी दानदाताओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए आपके आरोग्यमय, मंगलमय और उज्जवल भविष्य की सर्वदेवमयी गौमाता से प्रार्थना करता है।

आप अपनी सहयोग राशि समर्पण गौशाला के एकाउण्ट में भी जमा करा सकते हैं।

समर्पण गौशाला

एच.डी.एफ.सी. बैंक, गोवर्धन शाखा (मथुरा)
खाता संख्या - **21231450000099**
आई.एफ.एस.सी. कोड - **HDFC0002123**

भारतीय स्टेट बैंक, प्रताप बाजार, वृन्दावन शाखा
खाता संख्या - **30714411973**
आई.एफ.एस.सी. कोड - **SBIN0002502**

खोए हुए धन को परिश्रम से पुनः प्राप्त किया जा सकता है,
विस्मृत ज्ञान को पुनः याद किया जा सकता है,
अस्वस्थ शरीर दवा आदि के द्वारा पुनः स्वस्थ बनाया जा सकता है,
किन्तु बीते हुए क्षण को पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

कृपया सभी दानदाता अपनी सहयोग राशि के साथ यह सहमति पत्र अवश्य भरकर भेजने का कष्ट करें।

❁ सहमति–पत्र ❁

सेवा में,

अध्यक्ष, श्री राधा माधव सेवाश्रय चैरिटेबल ट्रस्ट
श्रीराधा माधव धाम, निकट श्याम कुटी
परिक्रमा मार्ग, वृन्दाबन (मथुरा) उ.प्र.– 281121

महोदय,

मैं..पुत्र / पुत्री / पत्नी श्री.. निवासी..आपकी समिति को रू..शब्दों में रू.. की धन राशि चैक नं0 / ड्राफ्ट / नगद....................................बैंक.. द्वारा...हेतु प्रदान कर रहा हूँ / रही हूँ।

कृपया समिति के द्वारा किये जा रहे इन पुनीत कार्यों में सहभागिता प्रदान करने का सुअवसर प्रदान करके अनुग्रहित करें।

कृपया धनराशि प्राप्ति रसीद प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद !

दिनांक.........................

भवदीय

हस्ताक्षर

नाम...

पता – ग्राम / शहर..

डाकखाना......................थाना.....................

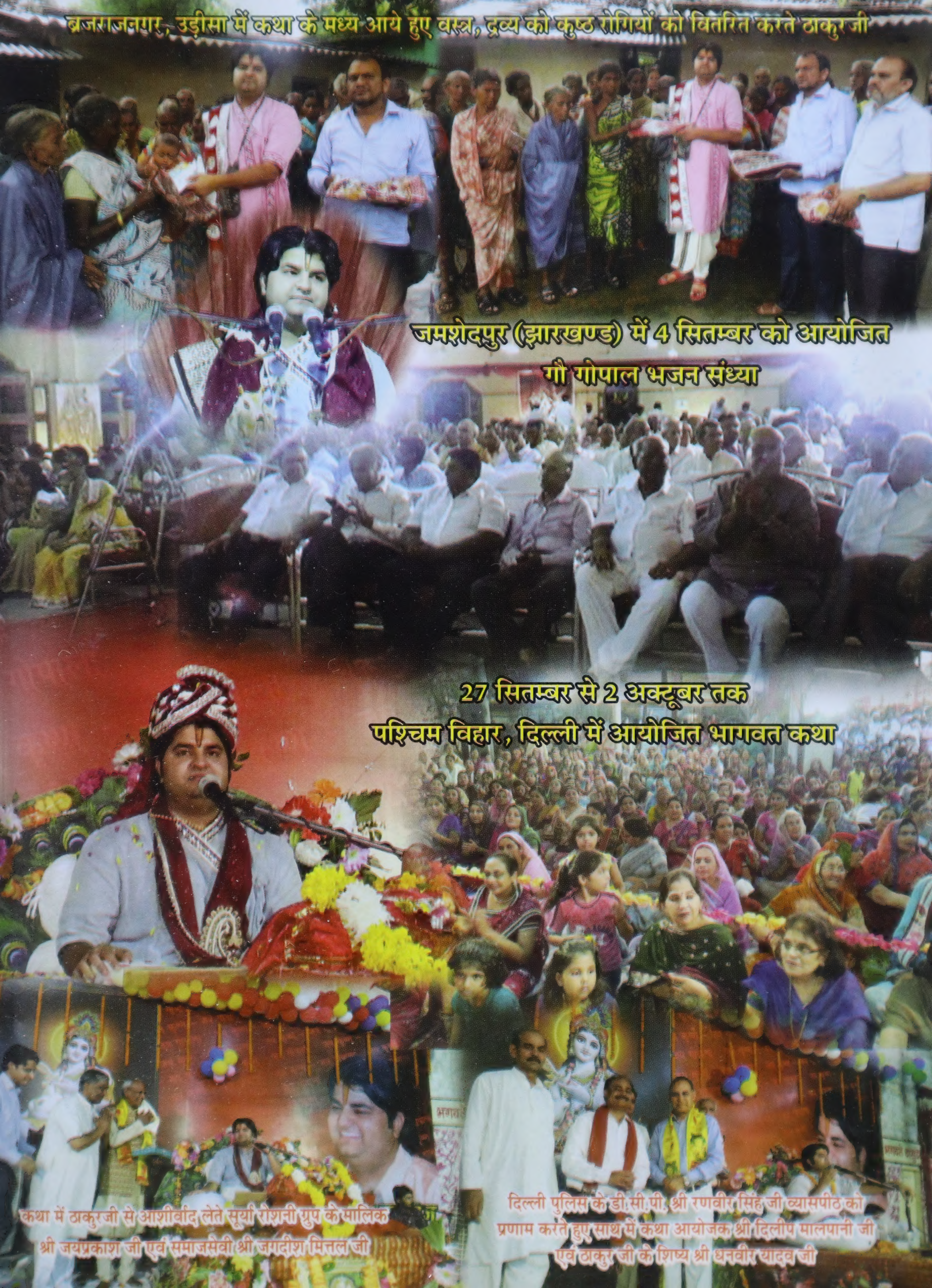
जिला...............................राज्य.....................

पिन कोड.......................मो. ....

पैन (PAN) नं. ....

स्वीकृत
श्री राधा माधव सेवाश्रय चैरिटेबल ट्रस्ट
अध्यक्ष / सचिव

हस्ताक्षर..........................


ब्रजराजनगर, उड़ीसा में कथा के मध्य आये हुए वस्त्र, द्रव्य को कुष्ठ रोगियों को वितरित करते ठाकुरजी

जमशेदपुर (झारखण्ड) में 4 सितम्बर को आयोजित
गौ गोपाल भजन संध्या

27 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक
पश्चिम विहार, दिल्ली में आयोजित भागवत कथा

कथा में ठाकुरजी से आशीर्वाद लेते सूर्या रोशनी ग्रुप के मालिक
श्री जयप्रकाश जी एवं समाजसेवी श्री जगदीश मित्तल जी

दिल्ली पुलिस के डी.सी.पी. श्री रणवीर सिंह जी व्यासपीठ को
प्रणाम करते हुए साथ में कथा आयोजक श्री दिलीप मालपानी जी
एवं ठाकुर जी के शिष्य श्री धनवीर यादव जी

Title Code : UPHIN45251 Date : 14.7.20



26 सितम्बर को महाराज अग्रसेन इण्टरनेशनल हॉस्टिल, रोहिणी, दिल्ली में महाराज अग्रसेन जी की प्रतिमा के अनावरण के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी, केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन जी श्रद्धेय ठाकुर जी, शंकराचार्य श्री ओंकारानन्द जी एवं ज्ञान अग्रवाल जी



6 से 12 अक्टूबर तक विकासपुरी, दिल्ली में नारायण सेवा संस्थान के सहयोगार्थ डॉ. आर.पी. शर्मा जी के द्वारा आयोजित कथा



सेवा में,

(2069) SH. RAM BALLABH VIJAY VARGIYA JI
GANDHI NAGAR, NAKA MADAR
AJMER-305007 (RAJ)
(M) 9214093793 (H-59)

प्रेषक : श्री राधामाधव सेवाश्रय चैरीटेबिल ट्रस्ट (रजि.)
श्री राधा माधव धाम, निकट श्याम कुटी, परिक्रमा मार्ग, वृन्दावन (मथुरा) 281121 उ.प्र.
मो. 0091-9219664065, 0091-8126721167 E-mail : info@samarpangoshala.com